Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H.D. Jain College, Ara
M.A semester - 1 Philosophy CC-01
Indian Epistemology & Logic

"Khyativada" (ख्यातिवाद)

2020 SEPTEMBER WEEK 36 WEDNESDAY 2 246-120

'ख्याति' शब्द की उत्पत्ति 'ख्या' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है - 'दिखना' या 'प्रकाशित होना'। इस प्रकार व्युत्पत्ति की दृष्टि से 'ख्यातिवाद' का अर्थ वह सिद्धान्त है जो वस्तुओं को दिखने अथवा वस्तु के अवबोध की व्याख्या करता है अथवा यह बतलाता है कि वस्तु का युक्त स्वरूप ऐसा क्यों है जैसी कि वह दिखती है। इसी अर्थ में प्रो० मुखर्जी ने कहा है कि ख्याति विज्ञान वस्तुओं के वैसी रूप में प्रकाशित अथवा प्रतिबिम्बित करता है जिस रूप में दर्पण अपने सम्मुख उपस्थित वस्तुओं को प्रतिबिम्बित अथवा प्रकाशित करता है।

ख्यातिवाद के अन्तर्गत भ्रान्तियों के बोध की व्याख्या की जाती है। ख्यातिवाद के तीन पक्ष हैं —

1. ज्ञानमीमांसीय
2. तत्वमीमांसीय
3. मनोवैज्ञानिक।

ज्ञानमीमांसीय पक्ष के अन्तर्गत ख्यातिवाद बोध की विषय वस्तु के रूप में 'वस्तु' अथवा ज्ञेय तथा बोध के स्वरूप की व्याख्या करता है। तत्वमीमांसीय रूप में ख्यातिवाद बोध से परे हर वस्तु के यथार्थ स्वरूप की तार्किक व्याख्या प्रस्तुत करने

की चेष्टा करता है तथा मनोवैज्ञानिक चेष्टा करता है तथा मनोवैज्ञानिक मानसिक प्रक्रिया रूप में यह बोध के मानसिक प्रक्रिया की व्याख्या करता है। ख्यातिवाद के इन तीन पक्षों ज्ञान मीमांसीय तात्विक और मनोवैज्ञानिक में से ख्यातिवाद का ज्ञान मीमांसीय पक्ष ही भारतीय परम्परा में अधिक प्रखरता से प्रस्तुत किया गया है क्योंकि 'ख्याति' (वस्तु का दिखना अथवा वस्तु का बोध) - चाहे वह बोध भ्रमात्मक हो (अथवा अभ्रमात्मक) सदैव (बोध) का ही विशेषण है न कि वस्तु का। इस प्रकार मूलतः बोध से संबंध होने के कारण ख्यातिवाद मूलतः एक ज्ञान मीमांसीय विवेचन है जिसके तीन पक्ष हैं तार्किक, तात्विक और मनोवैज्ञानिक। 'ख्याति' अथवा वस्तु के दृश्य स्वरूप तथा वस्तु के यथार्थ स्वरूप से इस दृश्य स्वरूप के अन्तर्संबंधों की व्याख्या विविध परम्पराओं से विविध रूपों में प्रस्तुत की गयी है। यहाँ इस समस्या का विश्लेषण मुख्यतः तीन उदाहरणों के माध्यम से किया गया है (क) रज्जु में सर्प विषय का अवबोध क्यों होता है? (रज्जु सर्प) (ख) आकाश में दो चाँद क्यों

दिखने जाते हैं। (द्विचंद्र) (ग) स्फटिक के पार्श्व में लाल रक्त पुष्प रखा जाता है तो स्फटिक का रंग लाल क्यों दिखने लगता है। (रक्त स्फटिक)।

मुख्यतः इन प्रश्नों के उत्तर में ही भारतीय दर्शन में ख्याति सम्बन्धी सिद्धांतों का विवरण मिलता है। यही कारण है कि ख्यातिवाद के विषय में यह एक व्यापक धारणा है कि ख्यातिवाद भारतीय दार्शनिकों का भ्रम विषयक विवेचन है।

ख्याति विषयक इन सिद्धान्तों की संख्या अलग-अलग ग्रंथों में अलग-अलग मिलती है। इस संबंध में भारतीय परम्परा में ख्याति पंचक की विशेष प्रसिद्धि है। ख्यातिपंचक इस प्रकार है—

"आत्मख्यातिरसत्ख्यातिरख्यातिः ख्यातिरन्यथा। तथा अनिर्वचनख्यातिरित्येतत् ख्यातिपंचकम्॥"

अर्थात् (1) आत्मख्याति (2) असत्ख्याति (3) अख्याति (4) अन्यथा ख्याति (5) अनिर्वचनीय ख्याति। ख्याति विषयक ये पाँच प्रकार के सिद्धांत हैं।

इनके अतिरिक्त ख्याति विषयक कुछ अन्य सिद्धान्त भी यत्र-तत्र देखने को मिलते हैं।

जो इस प्रकार हैं

1. सत्ख्यातिवाद अथवा विवेक
2. विपरीत ख्याति
ख्याति
3. सद्सद् ख्याति
4. प्रसिद्धार्थ ख्याति
5. अलौकिकार्थ ख्याति

"(आत्मख्यातिवाद)"

(1). आत्मख्यातिवाद (विज्ञान ख्यातिवाद) - यह विज्ञानवादी बौद्धों का सिद्धान्त है। इस दर्शन के अनुसार, जिसे हम बाह्य-जगत कहते हैं और जिसे हम भौतिक रूप में अस्तित्ववान् मानते हैं वह वास्तव में भौतिक रूप में अस्तित्व नहीं रखता। बाह्य संसार तो शशशृंग (खरगोश का सींग) अथवा आकाश-कुसुम के समान नितान्त असत् है। संसार बिल्कुल स्वप्न के समान है। जैसे-स्वप्न में हमें नानाविध पदार्थों का जगत दिखता है पर वे सब पदार्थ हमारे भीतर ही होते हैं, सत्य

केवल आलय विज्ञान अर्थात् हमारी चेतना में निरन्तर चलनेवाले विचार ही होते हैं जो हमें बाह्य पदार्थों का आकार लेते प्रतीत होते हैं। इस तरह संसार कोई वस्तु नहीं है। घट और घट के ज्ञान में कोई अंतर नहीं है। इस तरह विज्ञानवाद के अनुसार नाना उपचारों से युक्त यह संसार मन का विलास